
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
12th GEOGRAPHY
ARJUN BATCH
मानव भूगोल
भूसंसाधन तथा कृषि
ONE SHOT
LAND
PEOPLE
RESOURCES
AGRICULTURE
SUSTAINABILITY
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
23 सितंबर 2026 || 5:00 PM

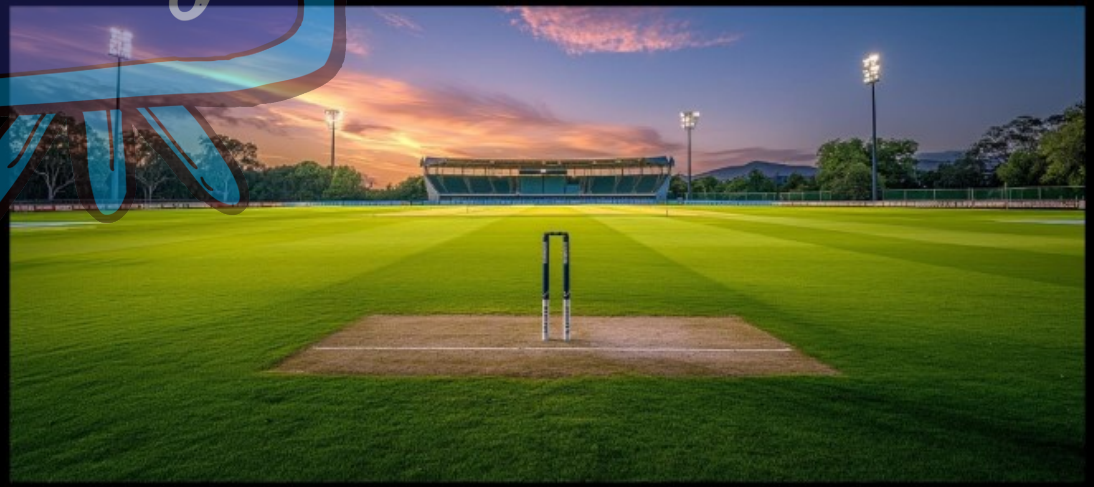
भूसंसाधन



भूसंसाधन

मनुष्य द्वारा भूमि को उत्पादन, रहने तथा मनोरंजक कार्यों हेतु संसाधन के रूप में प्रयोग

स्कूल की इमारत, सड़कें, क्रीड़ा उद्यान, खेत एवं चरागाह



भू-उपयोग वर्गीकरण

भू-राजस्व विभाग

भूराजस्व विभाग द्वारा भू-उपयोग संबंधी अभिलेख

☛ कुल प्रतिवेदन (रिपोर्टिंग) क्षेत्र :-

✧ भू-उपयोग संवर्गों का योग कुल प्रतिवेदन (रिपोर्टिंग) क्षेत्र

✧ भौगोलिक क्षेत्र से भिन्न

राजस्थान क्षेत्र 3,42,239 k.m²

32,87,263 k.m²

☛ भारतीय सर्वेक्षण विभाग :-

प्रशासकीय इकाइयों के भौगोलिक क्षेत्र की सही जानकारी देने का दायित्व

भूराजस्व विभाग	भारतीय सर्वेक्षण विभाग
भूराजस्व द्वारा प्रस्तुत क्षेत्रफल पत्रों के अनुसार रिपोर्टिंग क्षेत्र पर आधारित है जो कि कम या अधिक हो सकता है।	कुल भौगोलिक क्षेत्र भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सर्वेक्षण पर आधारित है तथा यह स्थायी है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भूराजस्व अभिलेख द्वारा अपनाया गया भू-उपयोग वर्गीकरण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भूराजस्व अभिलेख द्वारा अपनाया गया भू-उपयोग वर्गीकरण

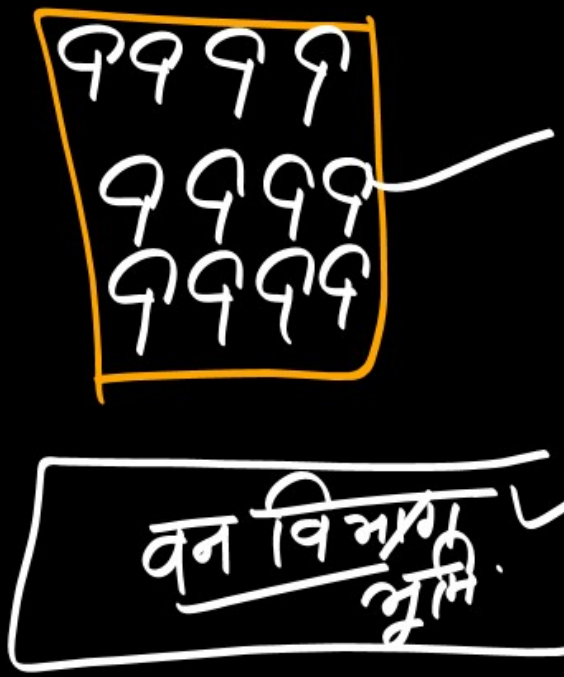
भू-राजस्व विभाग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
=
भौगोलिक क्षेत्र
=
आकड़े जारी

1. वनों के अधीन क्षेत्र	2. बंजर व व्यर्थ-भूमि	3. गैर कृषि-कार्यों में प्रयुक्त भूमि
4. स्थायी चरागाह क्षेत्र	5. विविध तरु-फ़सलों व उपवनों के अंतर्गत क्षेत्र	6. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
7. वर्तमान परती भूमि	8. पुरातन परती भूमि	9. निवल बोया क्षेत्र

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. वनों के अधीन क्षेत्र

- वर्गीकृत वन क्षेत्र तथा वनों के अंतर्गत वास्तविक क्षेत्र दोनों पृथक हैं।
- सरकार द्वारा वर्गीकृत वन क्षेत्र का सीमांकन इस प्रकार किया जहाँ वन विकसित हो सकते हैं।
- इस संवर्ग के क्षेत्रफल में वृद्धि दर्ज हो सकती है परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वहाँ वास्तविक रूप से वन पाए जाएँगे।

वनों के अधीन क्षेत्र

2.	बंजर व व्यर्थ-भूमि

- भूमि जो प्रचलित प्रौद्योगिकी की मदद से कृषि योग्य नहीं बनाई जा सकती
- बंजर पहाड़ी भूभाग, मरुस्थल, खड्ड आदि कृषि अयोग्य व्यर्थ-भूमि



3. गैर कृषि-कार्यों में प्रयुक्त भूमि

- **बस्तियाँ :** ग्रामीण व शहरी
- **अवसंरचना :** सड़कें, नहरें
- उद्योगों, दुकानों आदि हेतु भू-उपयोग
- द्वितीयक व तृतीयक कार्यकलापों में वृद्धि से इस संवर्ग के भू-उपयोग में वृद्धि

4.	स्थायी चरागाह क्षेत्र

- भूमि पर ग्राम पंचायत या सरकार का स्वामित्व
- भूमि का केवल एक छोटा भाग निजी स्वामित्व में
- साझा संपत्ति संसाधन : ग्राम पंचायत के स्वामित्व वाली भूमि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

① वन भूमि
② बंजर भूमि
③ गैर-कृषि भूमि
④ चरागाह भूमि

5.	विविध तरु-फ़सलों व उपवनों के अंतर्गत क्षेत्र

- जो बोए गए निवल क्षेत्र में सम्मिलित नहीं है।
- भूमि जिस पर उद्यान व फलदार वृक्ष हैं।
- अधिकतर भूमि निजी स्वामित्व में है।

उद्यान + फलदार वृक्ष को शामिल किया



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बंजर भूमि
/
वर्तमान तकनीकी
के द्वारा इसको
उपजाऊ नहीं बना
सकते।

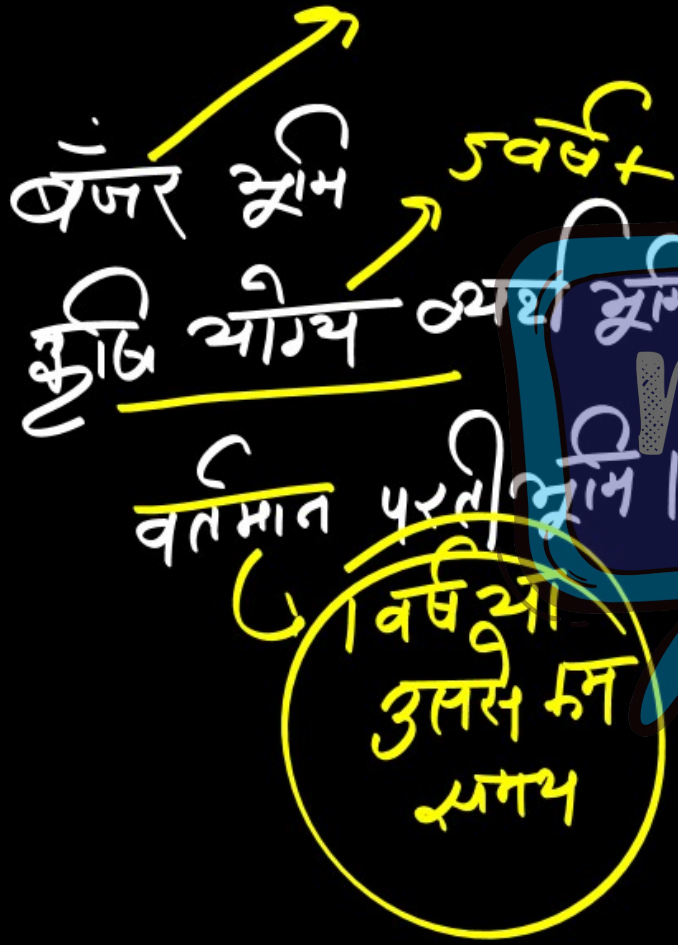
6.	कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

- भूमि जो पिछले पाँच वर्षों तक या अधिक समय तक परती या कृषिरहित है।
- भूमि उद्धार तकनीक द्वारा इसे सुधार कर कृषि योग्य बनाया जा सकता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



7. वर्तमान परती भूमि

- भूमि जो एक कृषि वर्ष या उससे कम समय तक कृषिरहित रहती है।
- भूमि की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु भूमि का परती रखना एक सांस्कृतिक चलन है।
- इस विधि से भूमि की क्षीण उर्वरकता या पौष्टिकता प्राकृतिक रूप से वापस आ जाती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5 वर्ष → तकनीकी सुधार

① कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

② वर्तमान परती भूमि
↳ 1 वर्ष कम

③ पुरातन परती भूमि
↳ 1 वर्ष 5 से 10 वर्ष

④ बंजर भूमि
↳ तकनीकी से कोई सुधार नहीं हो।

8.	पुरातन परती भूमि

- कृषि योग्य भूमि, जो एक वर्ष से अधिक लेकिन पाँच वर्षों से कम समय तक कृषिरहित
- भूभाग पाँच वर्ष से अधिक समय तक कृषि रहित रहता है तो इसे कृषि योग्य व्यर्थ भूमि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

निवल net शुद्ध बोया क्षेत्र

9.	निवल बोया क्षेत्र

भूमि जिस पर फ़सलें उगाई व काटी जाती हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



भारत में भू-उपयोग परिवर्तन

- भू-उपयोग आर्थिक क्रियाओं की प्रवृत्ति पर निर्भर
- समय के साथ आर्थिक क्रियाओं में बदलाव
- भूमि संसाधन क्षेत्रफल की दृष्टि से स्थायी



भू-उपयोग को प्रभावित करने वाले अर्थव्यवस्था के परिवर्तन



1. अर्थव्यवस्था का आकार में समय के साथ वृद्धि
2. समय के साथ अर्थव्यवस्था की संरचना में भी बदलाव
3. समय के साथ कृषि क्रियाकलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान कम होना

① अर्थव्यवस्था का आकार में वृद्धि।

② संरचना परिवर्तन

③ प्राथमिक (−)
द्वितीयक
तृतीयक (+)

चीनी - 1 kg
50/kg.

चावल
1
5-kg.
30 kg.

1.	अर्थव्यवस्था का आकार में समय के साथ वृद्धि

☛ उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य के संदर्भ में

☛ निर्भरता :-

- बढ़ती जनसंख्या
- बदलते आय-स्तर
- उपलब्ध प्रौद्योगिकी

☛ समय के साथ भूमि पर दबाव में वृद्धि

☛ सीमांत भूमि का भी प्रयोग

2. समय के साथ अर्थव्यवस्था की संरचना में बदलाव

- द्वितीयक व तृतीयक सेक्टरों में, प्राथमिक सेक्टर की अपेक्षा अधिक तीव्रता से वृद्धि
- भारत जैसे विकासशील देश में एक सामान्य बात
- धीरे-धीरे कृषि भूमि गैर-कृषि संबंधित कार्यों में प्रयुक्त
- ऐसा परिवर्तन शहरों के चारों तरफ़ अधिक तीव्र

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सकल घरेलु उत्पाद

GDP

3. समय के साथ, कृषि क्रियाकलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान कम होना

- भूमि पर कृषि क्रियाकलापों का दबाव कम नहीं होता
- विकासशील देशों में कृषि-भूमि पर बढते दबाव के कारण:-

कृषि पर निर्भर व्यक्तियों का अनुपात अपेक्षाकृत धीरे-धीरे घटता	कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान तीव्रता से कम	जनसंख्या जो कृषि सेक्टर पर निर्भर है प्रतिदिन वृद्धि

भारत में भू-उपयोग के अनुपात में परिवर्तन : 1950-51 तथा 2019-20



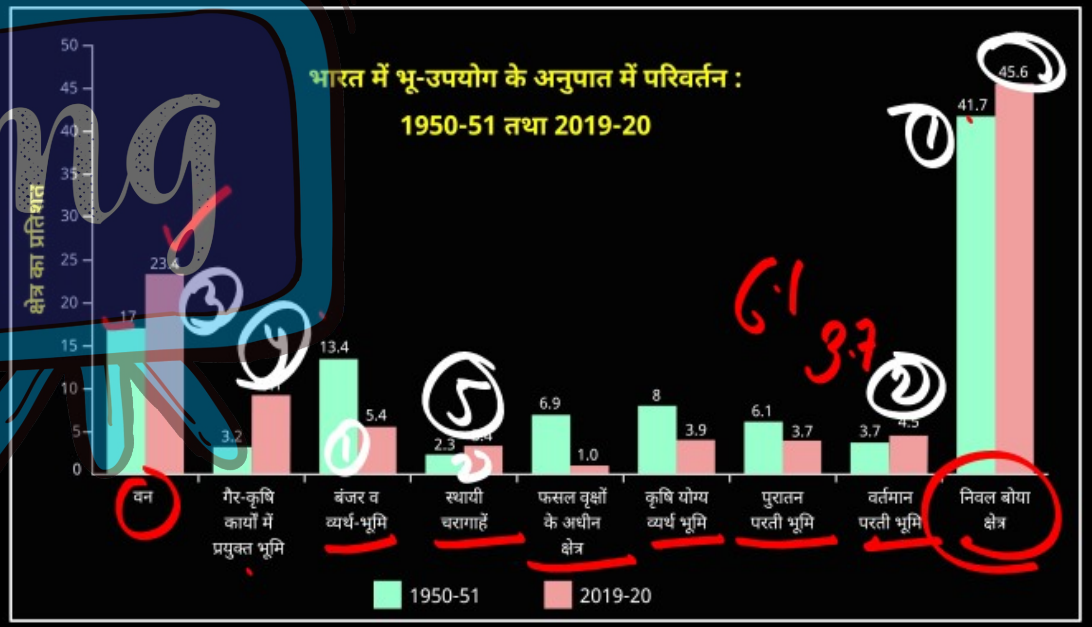
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में भू-उपयोग के अनुपात में परिवर्तन : 1950-51 तथा 2019-20

1950-51

2019-20



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

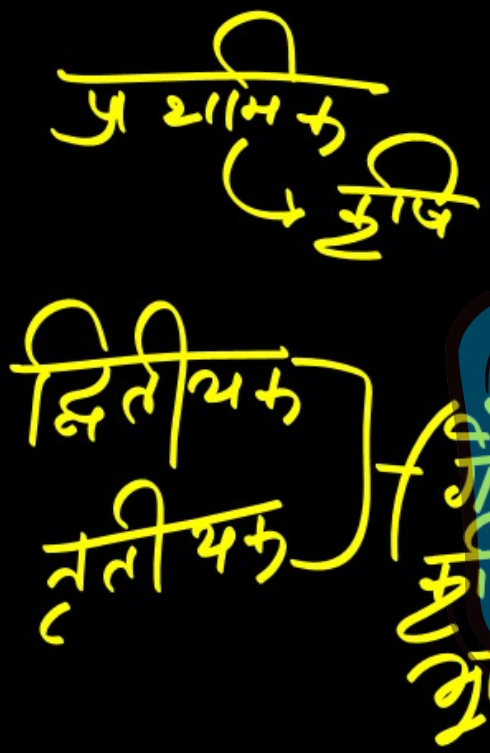
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में भू-उपयोग के अनुपात में परिवर्तन : 1950-51 तथा 2019-20

पाँच संवर्गों के अनुपात में वृद्धि	चार संवर्गों के अनुपात में कमी
1. वन क्षेत्र	1. बंजर व व्यर्थ भूमि
2. गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि	2. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
3. वर्तमान परती भूमि	3. फ़सल वृक्षों के अंतर्गत क्षेत्र
4. निवल बोया क्षेत्र	4. परती भूमि
5. स्थायी चारागाह	

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1.	गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त क्षेत्र में वृद्धि दर के कारण

- भारतीय अर्थव्यवस्था की बदलती संरचना
- औद्योगिक व सेवा सेक्टरों तथा अवसंरचना संबंधी विस्तार पर निर्भरता में वृद्धि
- बस्तियों के क्षेत्रफल में विस्तार में वृद्धि
- प्रसार, कृषि योग्य परंतु व्यर्थ भूमि तथा कृषि भूमि की हानि पर
- गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त क्षेत्र में वृद्धि दर अधिकतम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

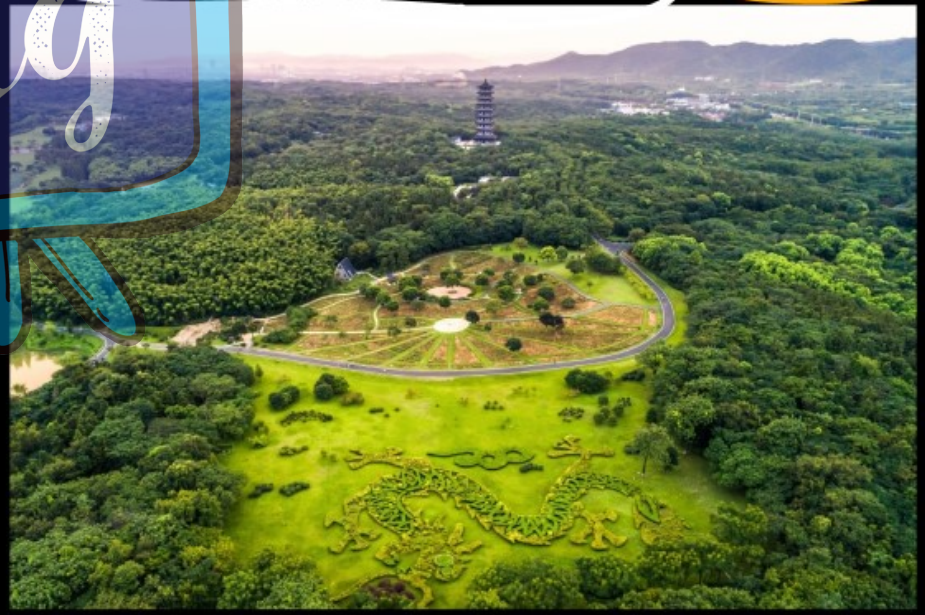
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. वन क्षेत्र में वृद्धि के कारण

- देश में वन क्षेत्र में वृद्धि सीमांकन के कारण
- वास्तविक वन आच्छादित क्षेत्र में वृद्धि नहीं

वन क्षेत्र

वन विभाग की भूमि



3.	वर्तमान परती भूमि में वृद्धि के कारण

- क्षेत्र में समयानुसार काफ़ी उतार-चढ़ाव की प्रवृत्ति
- वर्षा की अनियमितता तथा फ़सल चक्र पर निर्भर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. निवल बोए गए क्षेत्र में वृद्धि के कारण



- कृषि हेतु कृषि योग्य व्यर्थ भूमि का उपयोग एक वर्तमान घटना
- पहले निवल बोए गए क्षेत्र में धीमी गति से ह्रास
- न्यूनता का कारण गैर कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि के अनुपात में वृद्धि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चार संवर्गों के अनुपात में कमी के कारण

कृषि तथा गैर कृषि कार्यों हेतु भूमि पर दबाव में वृद्धि

फसल वृक्षों के अधीन क्षेत्र में कमी का कारण

कृषि भूमि पर बढ़ता दबाव

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भूमि के स्वामित्व के आधार पर

1. निजी भूसंपत्ति



2. साझा संपत्ति संसाधन



1.	निजी भूसंपत्ति

- भूमि पर व्यक्तियों का निजी स्वामित्व
- कुछ व्यक्तियों का सम्मिलित निजी स्वामित्व



2. साझा संपत्ति संसाधन

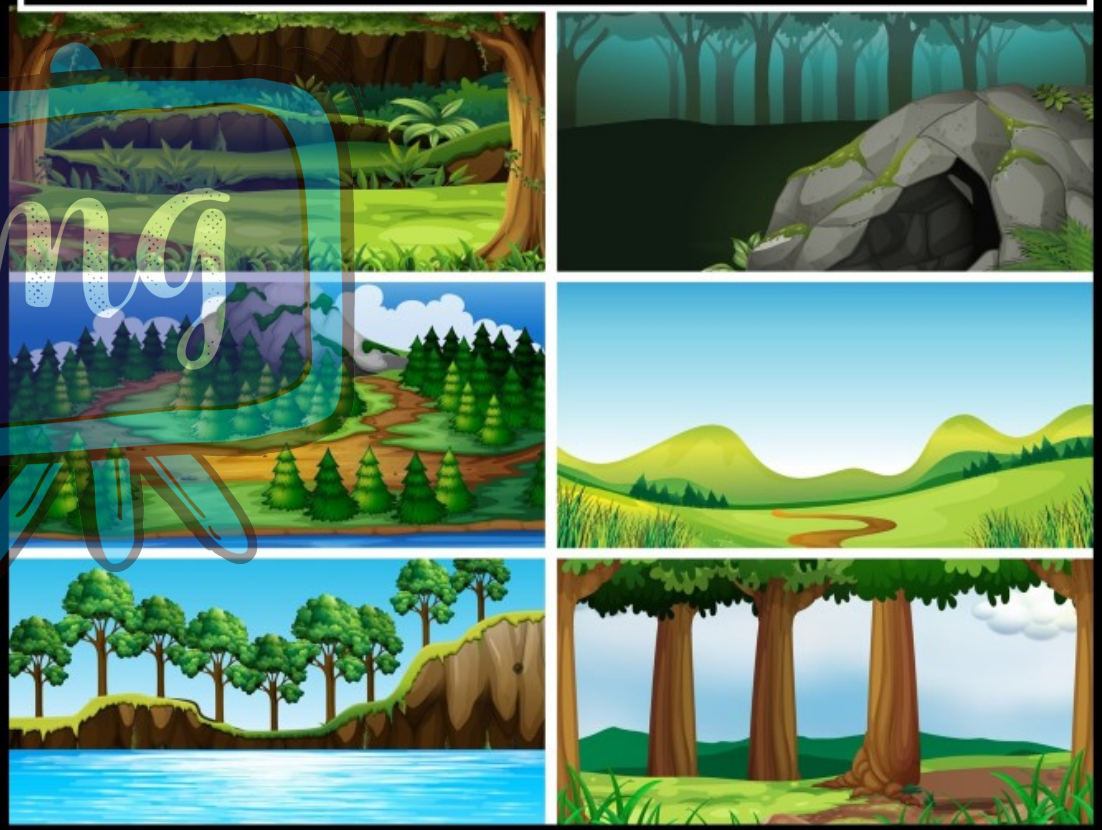
भूमियाँ सामुदायिक उपयोग हेतु राज्यों के स्वामित्व में



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साझा संपत्ति संसाधन प्रमुख उत्पाद



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

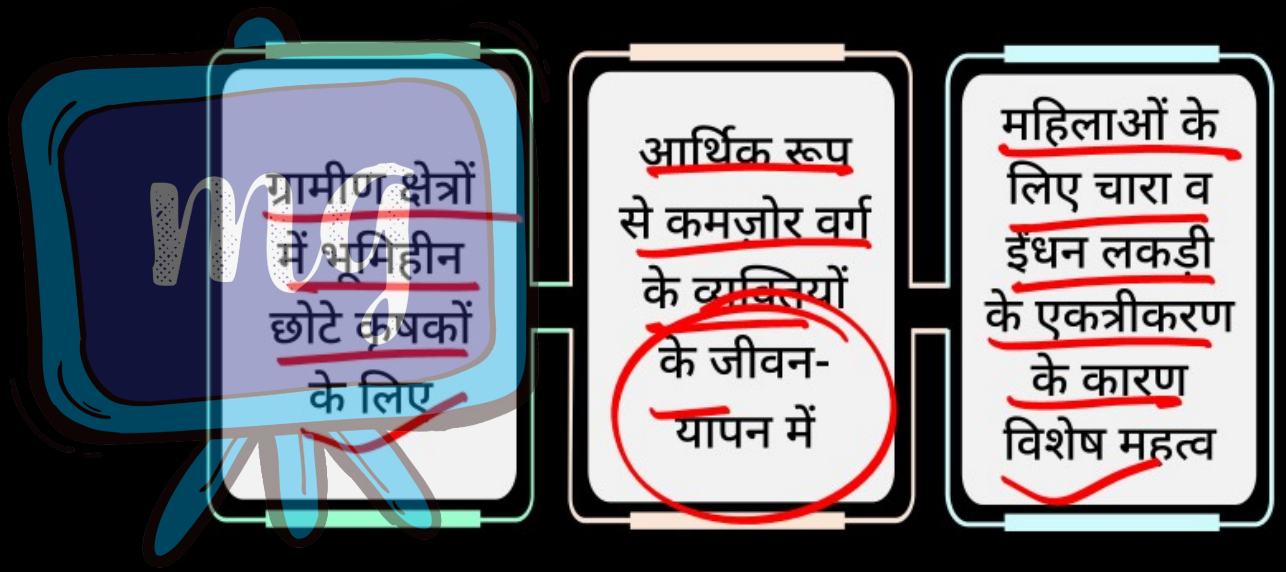
साझा संपत्ति संसाधन प्रमुख उत्पाद

- पशुओं के लिए चारा
- घरेलू उपयोग हेतु ईंधन
- लकड़ी
- फल
- रेशे
- गिरी
- औषधीय पौधे

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साझा संपत्ति संसाधन का महत्व



साझा संपत्ति संसाधन

- अन्य नाम : सामुदायिक प्राकृतिक संसाधन
- सभी सदस्यों को इसके उपयोग का अधिकार
- सभी सदस्यों के कुछ विशेष कर्त्तव्य



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साझा संपत्ति संसाधन के उदाहरण

1. सामुदायिक वन



2. चरागाह



3. ग्रामीण जलीय क्षेत्र



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

सामुदायिक प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग एक परिवार से बड़ी इकाई करती है तथा यही उसके प्रबंधन के दायित्वों का निर्वहन करती हैं।



भारत में कृषि भू-उपयोग



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में कृषि भू-उपयोग

- कृषि पूर्णतया भूमि पर आधारित
- कृषि उत्पादन में भूमि का योगदान अन्य सेक्टरों की तुलना में अधिक
- भूमि की गुणवत्ता : कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है जो अन्य कार्यों में नहीं

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण क्षेत्र

- भू-स्वामित्व का आर्थिक मूल्य
- भू-स्वामित्व का सामाजिक मूल्य
- प्राकृतिक आपदाओं में एक सुरक्षा की भाँति
- निजी विपत्ति में एक सुरक्षा की भाँति
- समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनता प्रत्यक्ष रूप से वहाँ की गरीबी से संबंधित है।



समस्त कृषि योग्य भूमि की संरचना



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

समस्त कृषि योग्य भूमि की संरचना

कृषि योग्य भू-उपयोग वर्ग	रिपोर्टिंग क्षेत्रफल का प्रतिशत		समस्त कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	
	1950-51	2019-20	1950-51	2019-20
कृषि योग्य बंजर भूमि	8.0	3.9	13.4	6.8
पुरातन परती भूमि	6.1	3.7	10.2	6.4
वर्तमान परती भूमि	3.7	4.5	6.2	7.8
निवल बोया गया क्षेत्र	41.7	45.6	70.0	79.0
सकल कृषि योग्य भूमि	59.5	57.7	100.00	100.00

नोट

पिछले वर्षों में समस्त रिपोर्टिंग क्षेत्र से कृषि भूमि का प्रतिशत कम हुआ है।

कृषि योग्य व्यर्थ भूमि संवर्ग में कमी के बावजूद कृषि योग्य भूमि में कमी आई है।

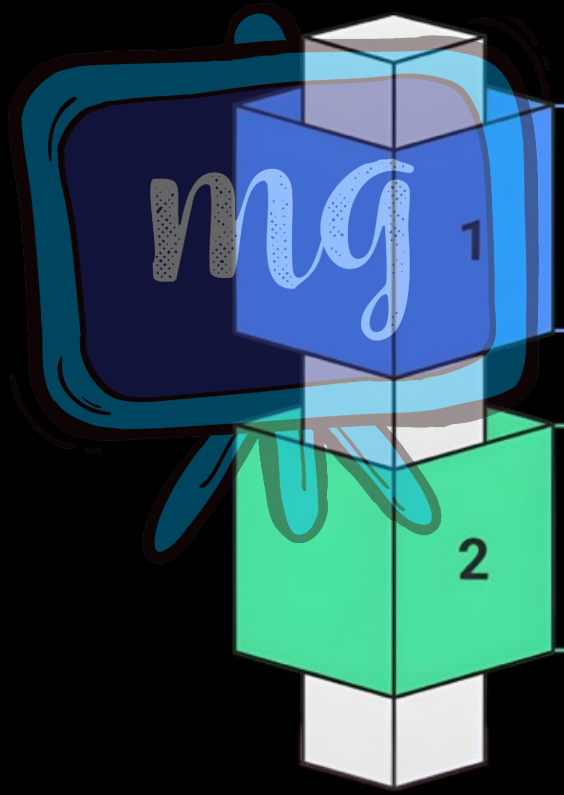
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में निवल बोया गया क्षेत्र

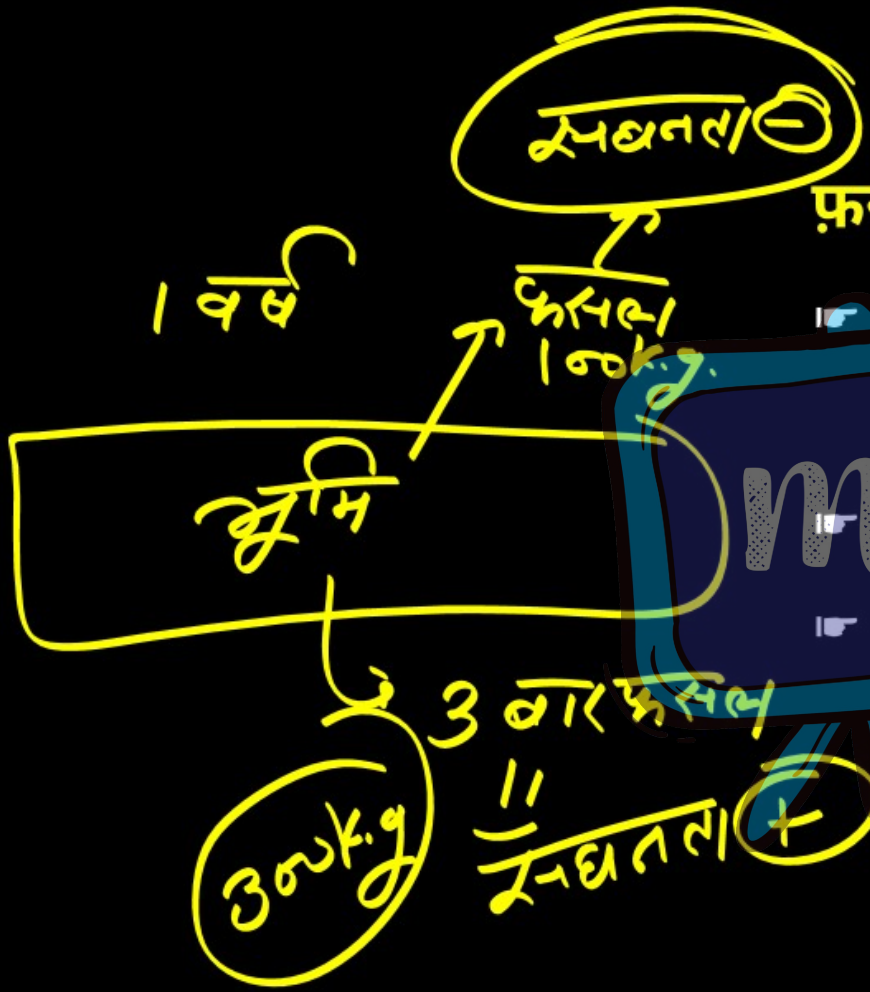
- भारत में निवल बोए गए क्षेत्र में बढ़ोतरी की संभावनाएँ सीमित
- भूमि बचत प्रौद्योगिकी विकसित करना अत्यंत आवश्यक

भूमि बचत प्रौद्योगिकी



1. प्रौद्योगिकी जो प्रति इकाई भूमि में फ़सल विशेष की उत्पादकता बढ़ाएँ

2. प्रौद्योगिकी जो प्रति इकाई भूमि में फ़सल विशेष की उत्पादकता बढ़ाएँ

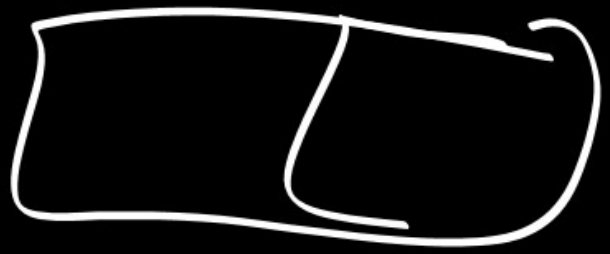


फ़सल सघनता

- एक कृषि वर्ष में गहन भू-उपयोग से सभी फ़सलों का उत्पादन बढ़ाना
- सीमित भूमि से भी कुल उत्पादन में वृद्धि
- श्रमिकों की माँग में भी पर्याप्त वृद्धि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



$$\text{कृषि गहनता} = \frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{निवल बोया गया क्षेत्र}} \times 100$$



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में फ़सल ऋतुएँ

1. खरीफ़



2. रबी

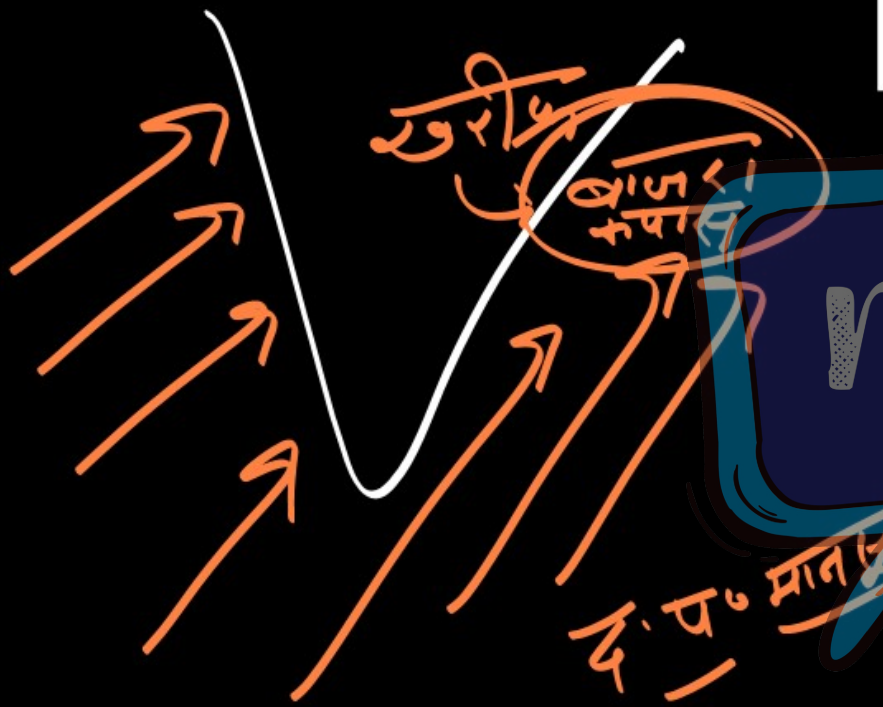


3. ज़ायद



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1.	खरीफ फ़सल ऋतु

- दक्षिण-पश्चिमी मानसून के साथ बुवाई
- उष्ण कटिबंधीय फ़सलें –

चावल, कपास, जूट, ज्वार, बाजरा व अरहर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खरीफ फसल

(शीतोष्ण / उपोष्ण कटिबन्ध फसल)

2.	रबी फ़सल ऋतु

- अक्टूबर-नवंबर में शरद ऋतु से मार्च-अप्रैल तक
- शीतोष्ण तथा उपोष्ण कटिबंधीय फ़सलें – गेहूं, चना, तथा सरसों



3. जायद फ़सल ऋतु

- अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फ़सल-ऋतु
- रबी की कटाई के बाद प्रारंभ
- तरबूज, खीरा, ककड़ी, सब्ज़ियाँ व चारे की फ़सलों की कृषि सिंचित भूमि पर

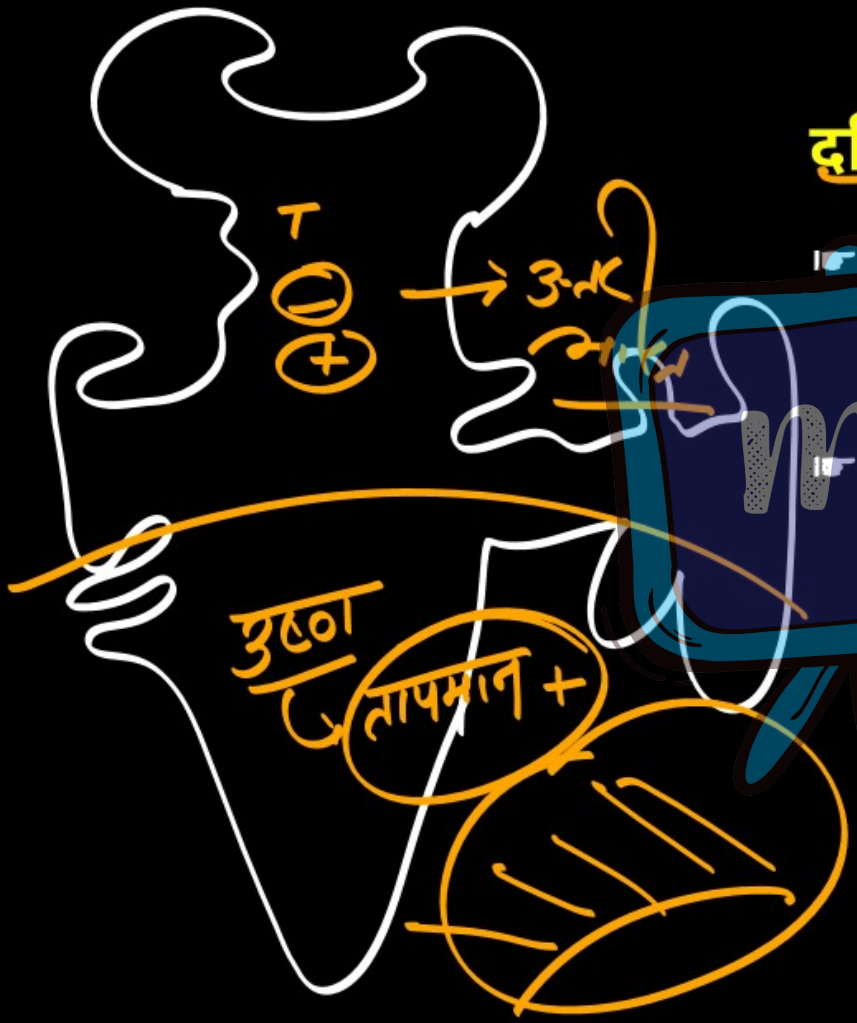


नोट

- देश के उत्तरी व आंतरिक भागों में तीन प्रमुख फ़सल ऋतुएँ- खरीफ, रबी व जायद के नाम से जानी जाती है।
- इस प्रकार की पृथक फ़सल ऋतुएँ देश के दक्षिण भागों में नहीं पाई जातीं है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



दक्षिण भारत

- अधिकतम तापमान वर्षभर किसी भी उष्ण कटिबंधीय फ़सल की बुवाई में सहायक है।
- जहाँ भी पर्याप्त मात्रा में सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध हैं, एक कृषि वर्ष में एक ही फ़सल तीन बार उगाई जा सकती है।

भारतीय कृषि ऋतु

कृषि ऋतु	प्रमुख फ़सलें	
	उत्तरी भारत राज्य	दक्षिणी राज्य
खरीफ़ (जून से सितंबर)	चावल, कपास, बाजरा, मक्का, ज्वार, अरहर (तुर)	चावल, मक्का, रागी, ज्वार तथा मूँगफली
रबी (अक्टूबर से मार्च)	गेहूँ, चना, तोरई, सरसों, जौ	चावल, मक्का, रागी, मूँगफली
ज़ायद (अप्रैल से जून)	वनस्पति, सब्ज़ियाँ, फल, चारा फ़सलें	चावल, सब्जियाँ, चारा फ़सलें

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि के प्रकार

1. सिंचित कृषि



2. वर्षा निर्भर (बारानी) कृषि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. सिंचित कृषि

- रक्षित सिंचाई कृषि
- उत्पादक सिंचाई कृषि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिंचाई कृषि



1. आर्द्रता की कमी के कारण फ़सलों को नष्ट होने से बचाना
2. वर्षा के अतिरिक्त जल की कमी को सिंचाई द्वारा पूरा करना
3. अधिकतम क्षेत्र को पर्याप्त आर्द्रता उपलब्ध कराना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



फ़सलों को पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराकर अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करना

जल निवेश की मात्रा रक्षित सिंचाई की अपेक्षा अधिक

2. वर्षा निर्भर (बारानी) कृषि

शुष्क भूमि कृषि



आर्द्र भूमि कृषि

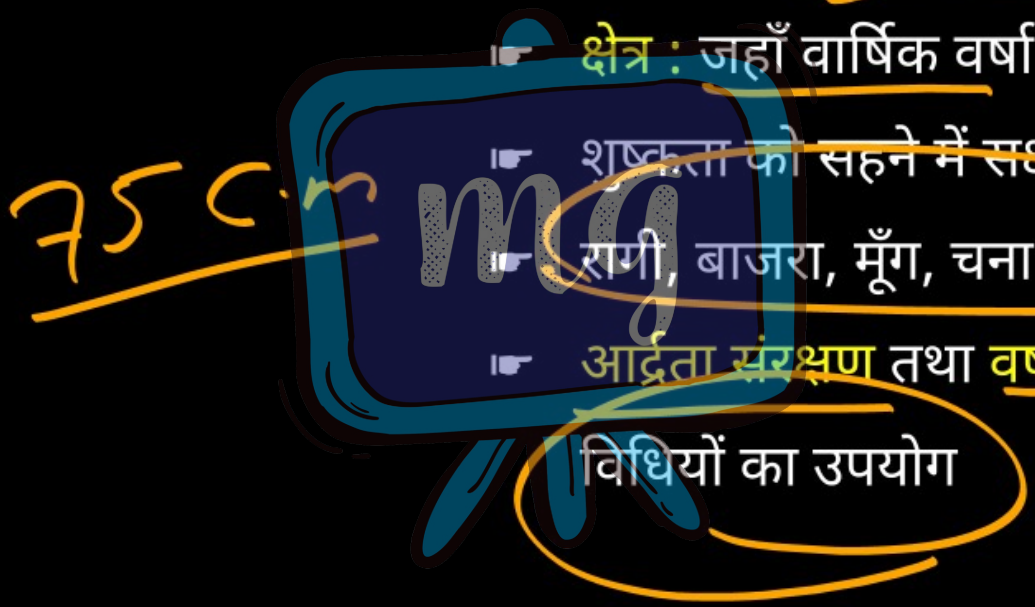


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शुष्क भूमि कृषि

- क्षेत्र : जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम
- शुष्कता को सहने में सक्षम फ़सलों की बुवाई
- रागी, बाजरा, मूँग, चना तथा ग्वार
- आर्द्रता संरक्षण तथा वर्षा जल के प्रयोग की विधियों का उपयोग



आर्द्र भूमि कृषि

- वर्षा ऋतु में वर्षा जल पौधों की ज़रुरत से अधिक
- बाढ़ तथा मृदा अपरदन की समस्या
- फ़सलें : चावल, जूट, गन्ना आदि तथा ताजे पानी की जलकृषि



खाद्यान्न फ़सल

- समस्त बोये क्षेत्र के दो-तिहाई भाग पर खाद्यान्न फ़सलें
- देश के सभी भागों में खाद्यान्न फ़सलें प्रमुख



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खाद्यान्न

अनाज



दालें



अनाज

- कुल बोये क्षेत्र के लगभग 54 प्रतिशत भाग पर
- उत्पादन : विश्व का ~11% भारत में
- विश्व में प्रमुख उत्पादक :-

कुल बोये क्षेत्र - 54%

उत्पादन - विश्व - 11%

1. अमेरिका
2. चीन
3. भारत

अनाज



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

→ भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसलें
① चावल
② गेहूँ

अनाज

1. उत्तम अनाज : चावल, गेहूँ
2. मोटे अनाज : ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खाद्य-

दालें



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दालें



प्रचुर मात्रा में प्रोटीन के स्रोत



शाकाहारी भोजन के प्रमुख संघटक



फलीदार फ़सलें



नाइट्रोजन योगीकरण से मृदा उर्वरकता में वृद्धि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दालों का उत्पादन

- भारत दालों का प्रमुख उत्पादक देश
- देश में दालों की खेती :-
  - दक्कन पठार पर (M.H.)
  - मध्य पठारी भागों में
  - उत्तर-पश्चिमी शुष्क भागों में (राजस्थान)
- कुल बोये क्षेत्र का ~11% भाग दालों के अधीन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दालों की उत्पादकता

- शुष्क क्षेत्रों में वर्षा आधारित फ़सल होने के कारण दालों की उत्पादकता कम
- उत्पादन में वार्षिक उतार-चढ़ाव
- भारत की प्रमुख दालें : चना तथा अरहर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चावल



चावल

- भारत की अधिकतर जनसंख्या का प्रमुख भोजन
- उष्ण आर्द्र कटिबंधीय फ़सल



चावल उत्पादक क्षेत्र

- कृषि : समुद्रतल से 2000 मीटर तक की ऊँचाई तक
- पूर्वी भारत के आर्द्र भागों में
- पश्चिमी भारत के शुष्क परंतु सिंचित क्षेत्र :- पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश व उत्तरी राजस्थान

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पश्चिम बंगाल व दक्षिणी राज्यों में चावल

- जलवायु अनुकूलता के कारण एक कृषि वर्ष में चावल की दो या तीन फ़सलें

- पश्चिम बंगाल चावल की तीन फ़सलें :-



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

हिमालय तथा देश के उत्तर-पश्चिम भागों में चावल दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु में खरीफ़ फ़सल के रूप में उगाई जाती है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चावल का वैश्विक उत्पादन



- विश्व का 22.07% चावल उत्पादन भारत में
- चीन के बाद भारत का विश्व में दूसरा स्थान (2018)
  - पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश व उत्तरी राजस्थान



भारत में चावल उत्पादन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में चावल उत्पादन

1/4

- कुल बोए क्षेत्र के एक-चौथाई भाग पर चावल
- प्रमुख चावल उत्पादक राज्य : पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब
- प्रति हेक्टेयर पैदावार अधिक : पंजाब, तमिलनाडु, हरियाणा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल तथा केरल
- संपूर्ण चावल क्षेत्र सिंचित : पंजाब, तमिलनाडु, हरियाणा, आंध्रप्रदेश
- प्रति हेक्टेयर पैदावार कम : मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व ओडिशा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1966-67

हरित क्रांति का प्रभाव

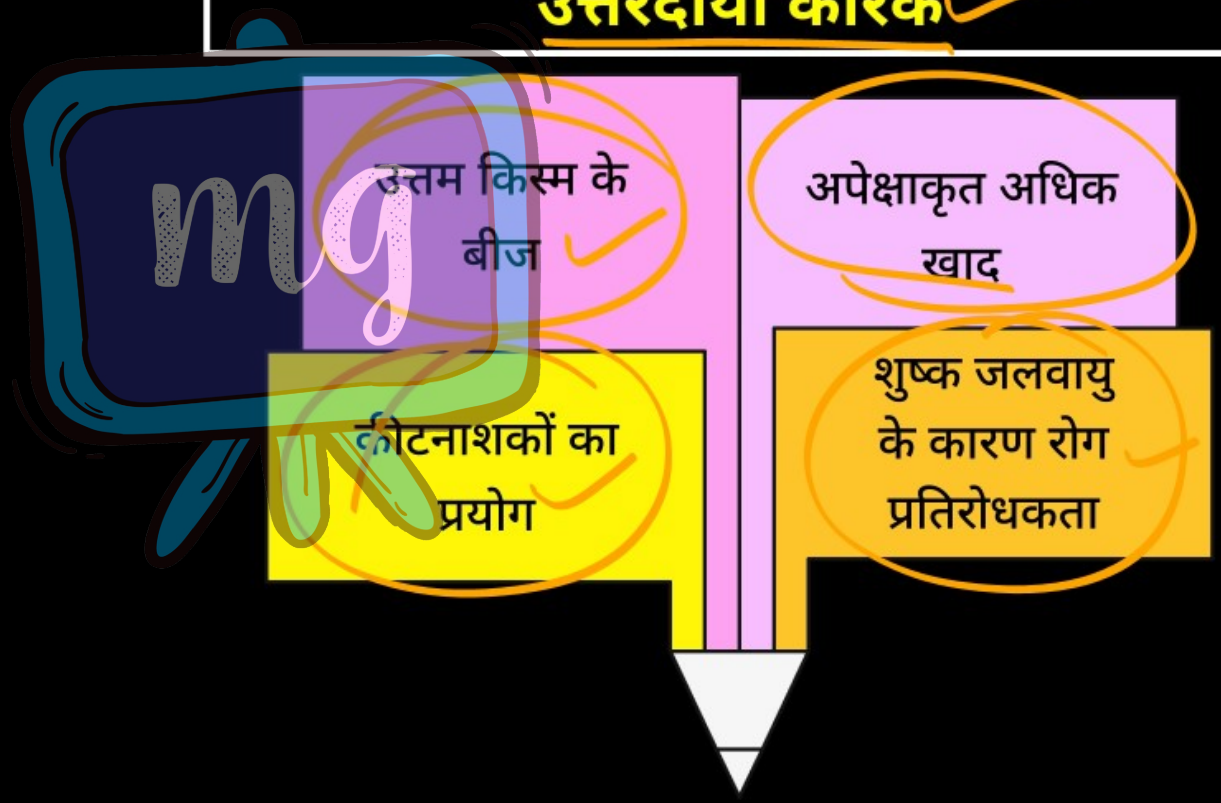
- पंजाब व हरियाणा पारंपरिक रूप से चावल उत्पादक राज्य नहीं
- हरियाणा, पंजाब के सिंचित क्षेत्रों में चावल की कृषि 1970 से प्रारंभ



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चावल की अधिक पैदावार के उत्तरदायी कारक



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गेहूँ



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गेहूँ

शीतोष्ण कटिबंधीय फ़सल

शरद् अर्थात् रबी ऋतु में बुवाई

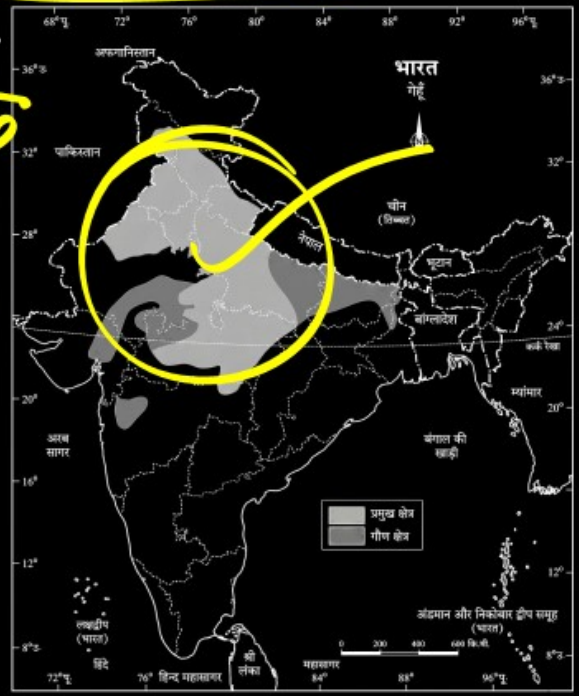
भारत में गेहूँ दूसरा प्रमुख अनाज

विश्व का 12.8 % गेहूँ उत्पादन भारत में (2017)

भारत में गेहूँ उत्पादन क्षेत्र

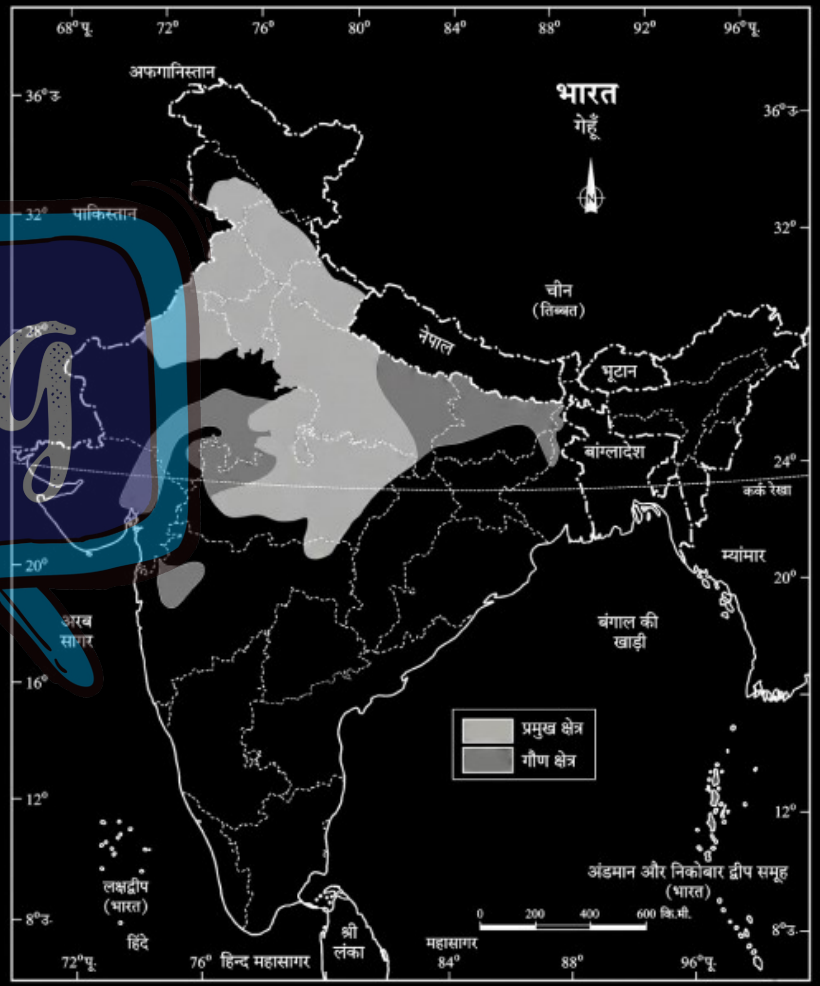
85 % क्षेत्र भारत के उत्तरी मध्य भाग तक केंद्रित

- उत्तर गंगा का मैदान
- मालवा पठार
- हिमालय पर्वतीय श्रेणी में 2700 मीटर ऊँचाई तक



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सिंचाई की आवश्यकता

- सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में ही बुवाई
- हिमालय के उच्च भागों में तथा मध्य प्रदेश के मालवा के पठारी क्षेत्र में यह वर्षा पर निर्भर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गेहूँ उत्पादक राज्य

- कुल बोये क्षेत्र के लगभग 14 % भाग पर गेहूँ की कृषि
- प्रमुख उत्पादक राज्य : उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गेहूँ उत्पादकता

- प्रति हेक्टेयर पैदावार अधिक :-

  पंजाब व हरियाणा में गेहूँ की उत्पादकता 4000 किलोग्राम/प्रति हेक्टेयर

- प्रति हेक्टेयर पैदावार मध्यम :-

  उत्तर प्रदेश, राजस्थान व बिहार

- उत्पादकता कम :-

  - मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर
  - गेहूँ की कृषि वर्षा आधारित

मोटे अनाज

- कुल बोये क्षेत्र के 16.5 प्रतिशत भाग पर बुवाई
- ज्वार, बाजरा, मक्का आदि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

ज्वार

- कुल बोए क्षेत्र के 5.3 प्रतिशत भाग पर
- दक्षिण व मध्य भारत के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की प्रमुख खाद्य फ़सल



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ज्वार उत्पादक राज्य

- महाराष्ट्र : देश का 50% से अधिक उत्पादन
- अन्य प्रमुख राज्य : कर्नाटक, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना



ज्वार : फसल ऋतु

- दक्षिण राज्य : खरीफ़ व रबी दोनों ऋतुओं में
- उत्तर भारत :
  - खरीफ़ की फ़सल
  - मुख्यतः चारा फ़सल के रूप में



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

विंध्याचल के दक्षिण में ज्वार वर्षा आधारित फ़सल है तथा यहाँ इसकी उत्पादकता कम है।



बाजरा

- शुष्क दौर तथा सूखा सहन करने में समर्थ
- एकल तथा मिश्रित फ़सल के रूप में बुवाई
- कुल बोये क्षेत्र के ~5.2 % भाग पर

बाजरा उत्पादक प्रमुख क्षेत्र

- उत्पादक क्षेत्र :-

भारत के पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम भागों में गर्म तथा शुष्क जलवायु

- उत्पादक राज्य :-

महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व हरियाणा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पैदावार में वृद्धि के कारण

- सूखा प्रतिरोधक किस्मों का आगमन से
- राजस्थान, गुजरात व हरियाणा में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार



मक्का

- एक खाद्य तथा चारा फ़सल
- निम्न कोटि मिट्टी व अर्धशुष्क जलवायवी परिस्थितियाँ आवश्यक
- कुल बोये क्षेत्र के केवल 3.6% भाग में



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मक्का उत्पादक क्षेत्र

- किसी विशेष क्षेत्र में केंद्रित नहीं
- पूर्वी व उत्तर-पूर्वी भारत को छोड़कर देश के लगभग सभी हिस्सों में
- प्रमुख उत्पादक राज्य : कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान व उत्तर प्रदेश

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मक्का उत्पादन

- अन्य मोटे अनाजों की अपेक्षा इसकी पैदावार अधिक है।
- इसकी पैदावार दक्षिण राज्यों में अधिक है जो मध्य भागों की ओर कम होती जाती है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चना



चना

जलवायु व वर्षा :-

- उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र की फ़सल
- मुख्यतः वर्षा आधारित फ़सल
- वर्षा की केवल एक या दो हल्की बौछारों या एक या दो बार सिंचाई की आवश्यकता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चना उत्पादक क्षेत्र

- कुल बोये क्षेत्र के केवल 2.8 प्रतिशत भाग पर
- देश के मध्य, पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी भागों में
- रबी की ऋतु में



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हरित क्रांति का प्रभाव

- हरियाणा, पंजाब तथा उत्तरी राजस्थान में हरित क्रांति की शुरुआत से चने के फ़सल क्षेत्रों में कमी
- चने की जगह गेहूँ की फ़सल



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख चना उत्पादक राज्य

- मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना तथा राजस्थान
- उत्पादकता कम, सिंचित क्षेत्रों में भी उत्पादकता में एक से दूसरे वर्ष के बीच उतार-चढ़ाव



अरहर (तुर)



अरहर (तुर)

देश की दूसरी प्रमुख दाल फ़सल

कुल बोए गए क्षेत्र के ~2 % भाग पर

अन्य नाम : लाल चना तथा पिजन पी.

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अरहर उत्पादक क्षेत्र

- देश के मध्य तथा दक्षिणी राज्यों के शुष्क भागों में
- वर्षा-आधारित परिस्थितियों तथा सीमांत भू-क्षेत्रों पर बुवाई



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख अरहर उत्पादक राज्य

- महाराष्ट्र : अरहर के कुल उत्पादन का ~ 1/3 भाग
- अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य : उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात तथा मध्य प्रदेश



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

अरहर फ़सल की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता कम तथा अनियमित है।



तिलहन

- उद्देश्य : खाद्य तेल निकालना
- प्रमुख तिलहन फ़सलें : मूंगफली, तोरिया, सरसों, सोयाबीन तथा सूरजमुखी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख तिलहन उत्पादक क्षेत्र

- मालवा पठार, मराठवाड़ा, गुजरात, राजस्थान के शुष्क भाग, तेलंगाना व आंध्र प्रदेश के रायलसीमा प्रदेश
- कुल शस्य क्षेत्र के ~14% भाग पर तिलहन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मूँगफली

विश्व में 18.8% मूँगफली का उत्पादन भारत में (2018)

दक्षिण भारत में यह रबी ऋतु में बुवाई

शुष्क प्रदेशों की वर्षा-आधारित खरीफ फ़सल

कुल शस्य क्षेत्र के 3.6% क्षेत्र पर

मूँगफली उत्पादक राज्य

गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

- तमिलनाडु में जहाँ भी मूँगफली आंशिक रूप से सिंचित है, वहां इसकी पैदावार अपेक्षाकृत अधिक है।
- परंतु आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में मूँगफली पैदावार कम है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तोरिया व सरसों



तोरिया व सरसों

उपोष्णकटिबंधीय फ़सलें

मध्य व उत्तर-पश्चिमी भारत में रबी में बुवाई

पाला सहन नहीं कर सकतीं

उत्पादन में वार्षिक उतार-चढ़ाव

क्षेत्र का लगभग दो-तिहाई भाग सिंचित

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तोरिया व सरसों उत्पादन में वृद्धि के कारण

- सिंचाई का प्रसार
- बीज सुधार
- प्रौद्योगिकी विकास



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तोरिया व सरसों उत्पादन

- कुल शस्य क्षेत्र के केवल 2.5 प्रतिशत भाग पर
- राजस्थान : देश का एक-तिहाई उत्पादन
- अन्य प्रमुख उत्पादक : राज्य हरियाणा, तथा मध्य प्रदेश
- प्रति हेक्टेयर उत्पादकता : हरियाणा तथा पंजाब में अपेक्षाकृत अधिक



सोयाबीन

अधिकतर मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र में बुवाई : देश का ~90% सोयाबीन



सूरजमुखी

- सांद्रण राजस्थान, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना तथा इससे जुड़े हुए महाराष्ट्र के क्षेत्र में
- उत्तरी भागों में यह एक गौण फ़सल
- सिंचित क्षेत्रों में इनका उत्पादन अधिक



रेशेदार फसलें



रेशेदार फसलें

- उपयोग : कपड़ा, थैला, बोरा आदि सामान बनाने के लिए रेशा प्राप्त
- भारत की प्रमुख रेशेदार फ़सलें : कपास तथा जूट





कपास



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कपास

- उष्ण कटिबंधीय फ़सल
- अर्ध-शुष्क भागों में खरीफ़ ऋतु में बुवाई
- विभाजन से भारत का बहुत बड़ा कपास उत्पादन क्षेत्र पाकिस्तान में
- पिछले 50 वर्षों में भारत में इसके क्षेत्रफल में लगातार वृद्धि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में कपास उत्पादन

भारतीय कपास	अमेरिकन कपास
छोटे रेशे वाली	लंबे रेशे वाली





नरमा

अमेरिकन कपास का उत्तर-पश्चिमी भारत में स्थानीय नाम

कपास पर फूल आने के समय आकाश बादल-रहित होना चाहिए।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कपास उत्पादन

4.7%

- भारत का विश्व में चीन के पश्चात दूसरा स्थान
- कुल बोए क्षेत्र के ~ 4.7% क्षेत्र पर कपास



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

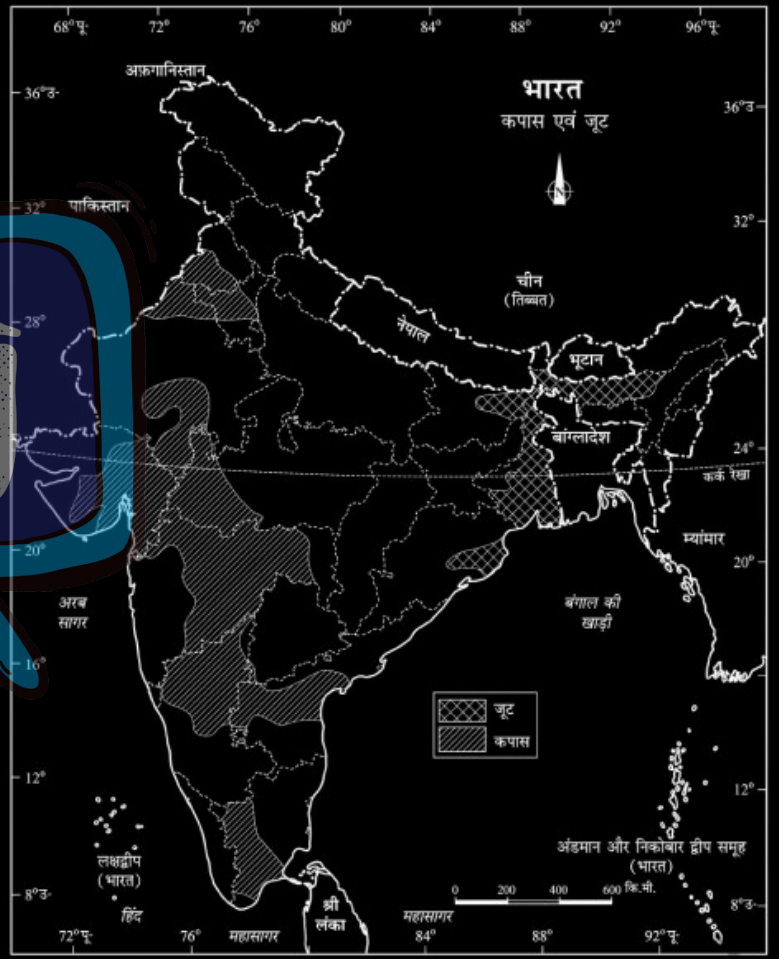
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कपास के मुख्य उत्पादक क्षेत्र

1. उत्तर-पश्चिम भारत : पंजाब, हरियाणा तथा उत्तरी राजस्थान
2. पश्चिम भारत : गुजरात तथा महाराष्ट्र
3. दक्षिण भारत : तेलंगाना, कर्नाटक व तमिलनाडु के पठारी भाग

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कपास के अग्रणी उत्पादक राज्य

गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश,

पंजाब तथा हरियाणा



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कपास की उत्पादकता

- उत्तर-पश्चिमी सिंचाई सुविधा वाले भागों में कपास का प्रति हेक्टेयर उत्पादन अधिक
- उत्पादन महाराष्ट्र के वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों में बहुत कम



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जूट



जूट

उपयोग : मोटे वस्त्र, थैला,
बोरे व अन्य सजावटी सामान बनाने में

पश्चिम बंगाल तथा इससे
संस्पर्शी पूर्वी भागों की एक व्यापारिक फ़सल

विभाजन से देश का विशाल
जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

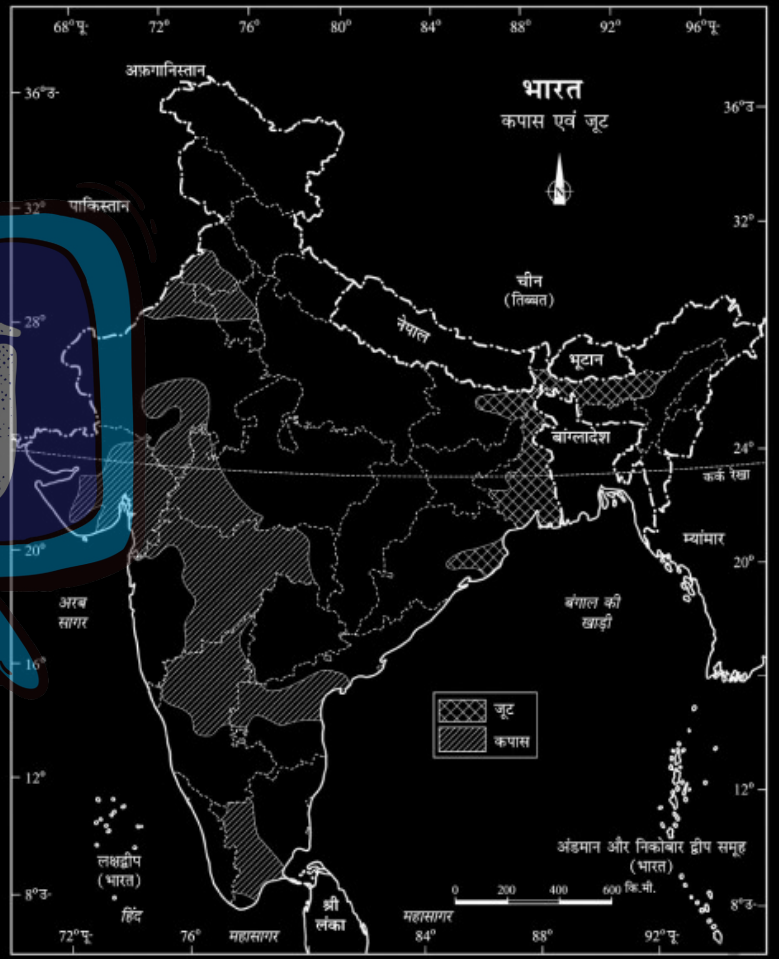
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. विश्व का ~60% जूट उत्पादन भारत में
2. पश्चिम बंगाल : देश के कुल उत्पादन का तीन-चौथाई भाग
3. अन्य जट उत्पादक क्षेत्र : बिहार व आसाम
4. कुल शस्य क्षेत्र के 0.5 प्रतिशत भाग पर जूट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गन्ना

- गन्ना एक उष्ण कटिबंधीय फ़सल
- वर्षा पर निर्भर परिस्थितियों में आर्द्र व उपार्द्र
- भारत में सिंचित क्षेत्रों में कृषि



विश्व में गन्ना उत्पादन (2018)

1. ब्राजील :-
2. भारत :-

1975

- विश्व के 19.76% गन्ने का उत्पादन
- कुल शस्य क्षेत्र के 2.4% भाग पर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

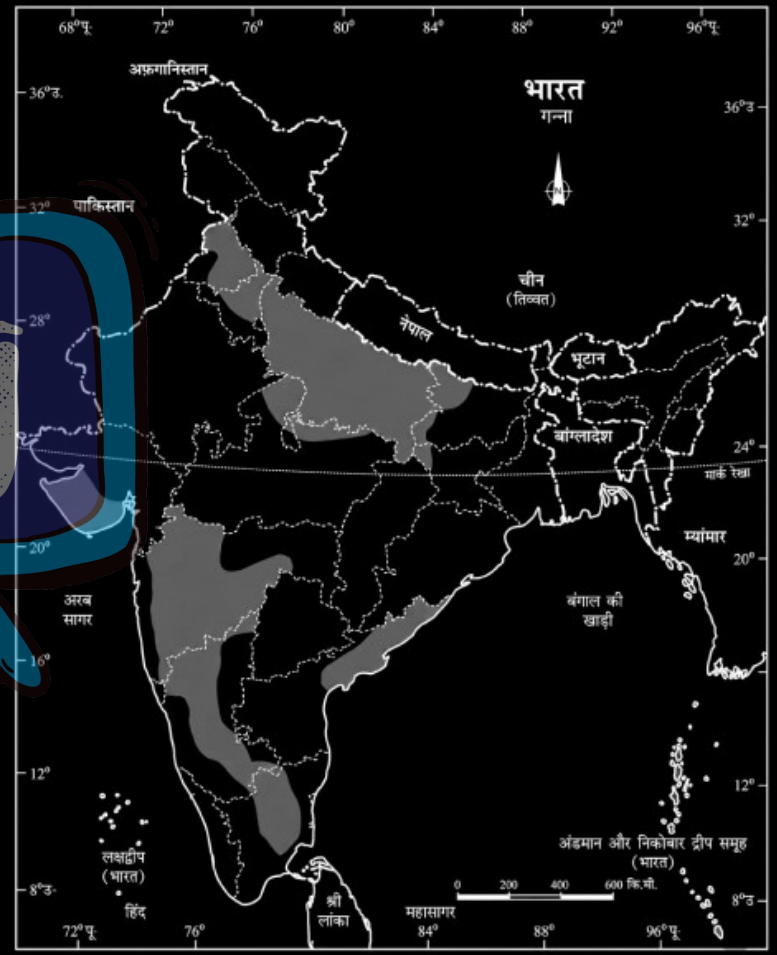
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में गन्ना उत्पादन क्षेत्र

- गंगा-सिंधु के मैदान में अधिकतर बुवाई उत्तर-प्रदेश तक सीमित
- पश्चिम भारत में महाराष्ट्र व गुजरात तक विस्तृत
- दक्षिण भारत : कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना व आंध्र प्रदेश के सिंचाई वाले भागों में

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में गन्ना उत्पादक राज्य

- उत्तरप्रदेश : देश का 40% गन्ना उत्पादन
- अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य : महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश
- उत्तरी भारत में उत्पादन कम
- दक्षिण भारत में उत्पादन अधिक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चाय



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चाय

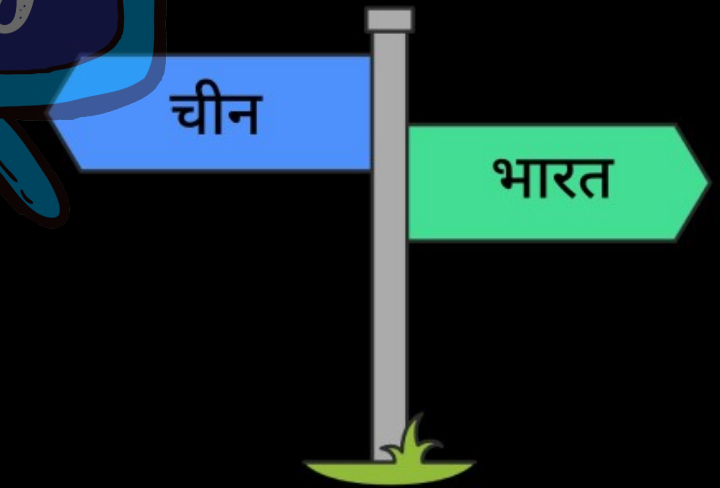
- रोपण कृषि जो पेय पदार्थ के रूप में प्रयोग
- काली चाय की पत्तियाँ किण्वित
- चाय की हरी पत्तियाँ अकिण्वित
- पत्तियों में कैफ़िन तथा टैनिन की प्रचुरता
- उत्तरी चीन के पहाड़ी क्षेत्रों की देशज फ़सल
- उष्ण आर्द्र व उपोष्ण आर्द्र कटिबंधीय जलवायु
- तरंगित भागों पर अच्छे अपवाह वाली मिट्टी में

विश्व में चाय उत्पादन



विश्व में चाय उत्पादन

- भारत चाय का अग्रणी उत्पादक देश
- विश्व का ~21.22% चाय का उत्पादन भारत
- चाय-निर्यातक देश (2018) :-



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

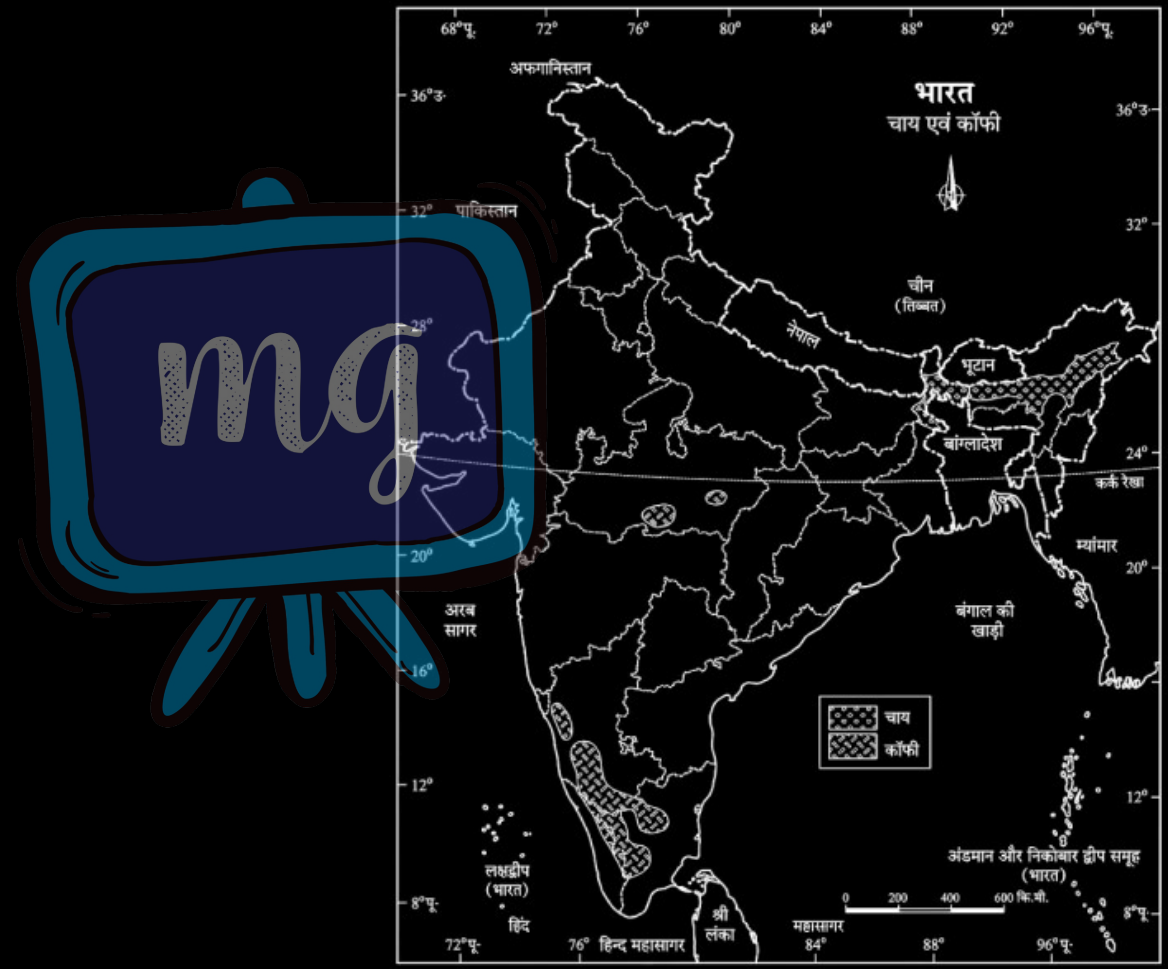
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में चाय की खेती

- 1840 में असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रारंभ : देश का प्रमुख चाय उत्पादन क्षेत्र
- पश्चिम बंगाल : दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, कूचबिहार
- दक्षिण भारत : नीलगिरी तथा इलायची की पहाड़ियों के निचले ढालों पर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



भारत में चाय उत्पादक राज्य

☛ असम :-

- ✧ कुल शस्य क्षेत्र के 53.2 % भाग पर
- ✧ देश के कुल उत्पादन में आधे से अधिक भाग

☛ अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य :-

- पश्चिम बंगाल
- तमिलनाडु

कॉफ़ी

- उष्ण कटिबंधीय रोपण कृषि
- बीजों को भूनकर, पीसकर पेय के रूप में प्रयोग



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कॉफ़ी की किस्में

अरेबिका

रोबस्ता

लिबेरिका



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

भारत अधिकतर उत्तम किस्म की अरेबिका कॉफ़ी का उत्पादन करता है, जिसकी अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में बहुत माँग हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विश्व में कॉफ़ी उत्पादक देश (2018)

1. ब्राजील
2. वियतनाम
3. इंडोनेशिया
4. कोलंबिया
5. होंडुरास
6. इथियोपिया
7. पेरू
8. भारत

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

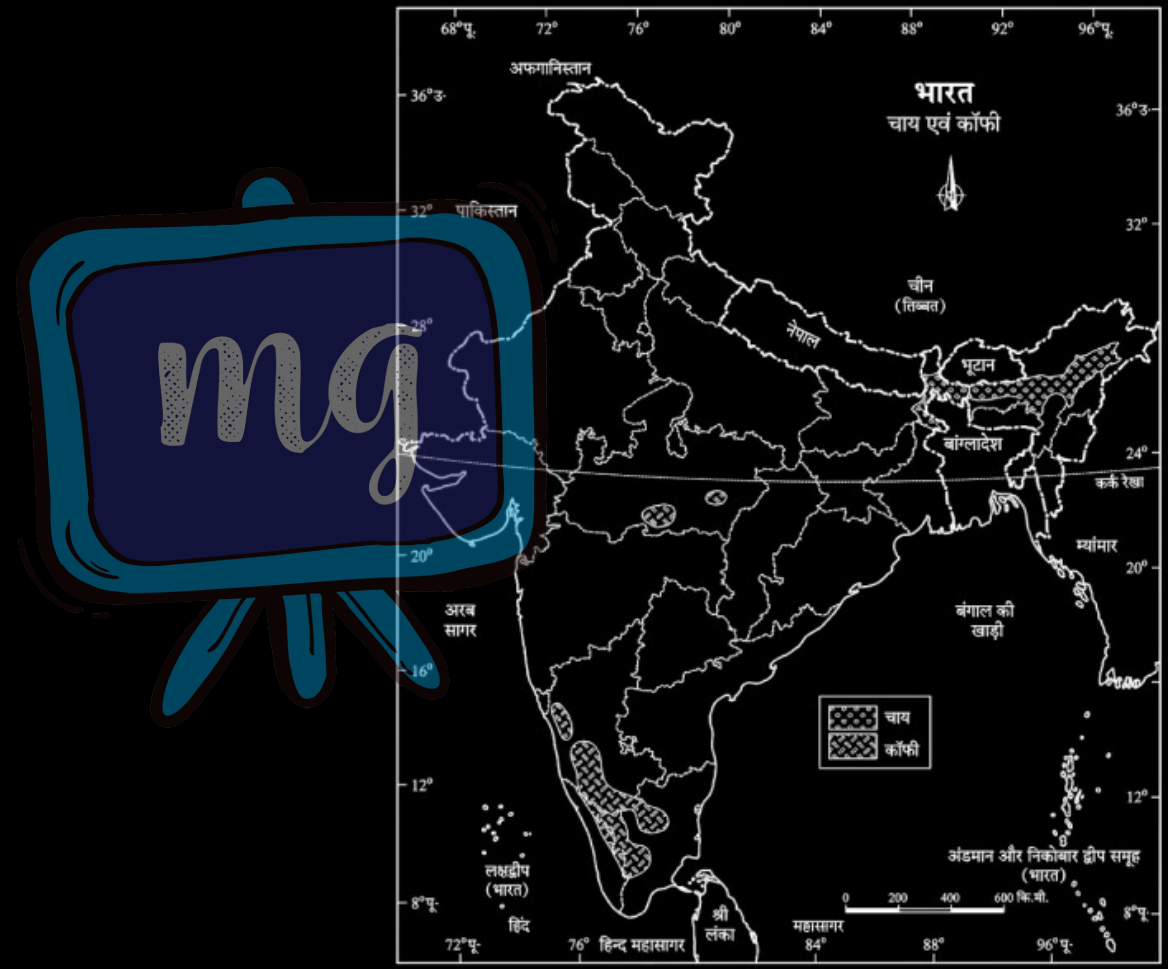
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में कॉफ़ी उत्पादन

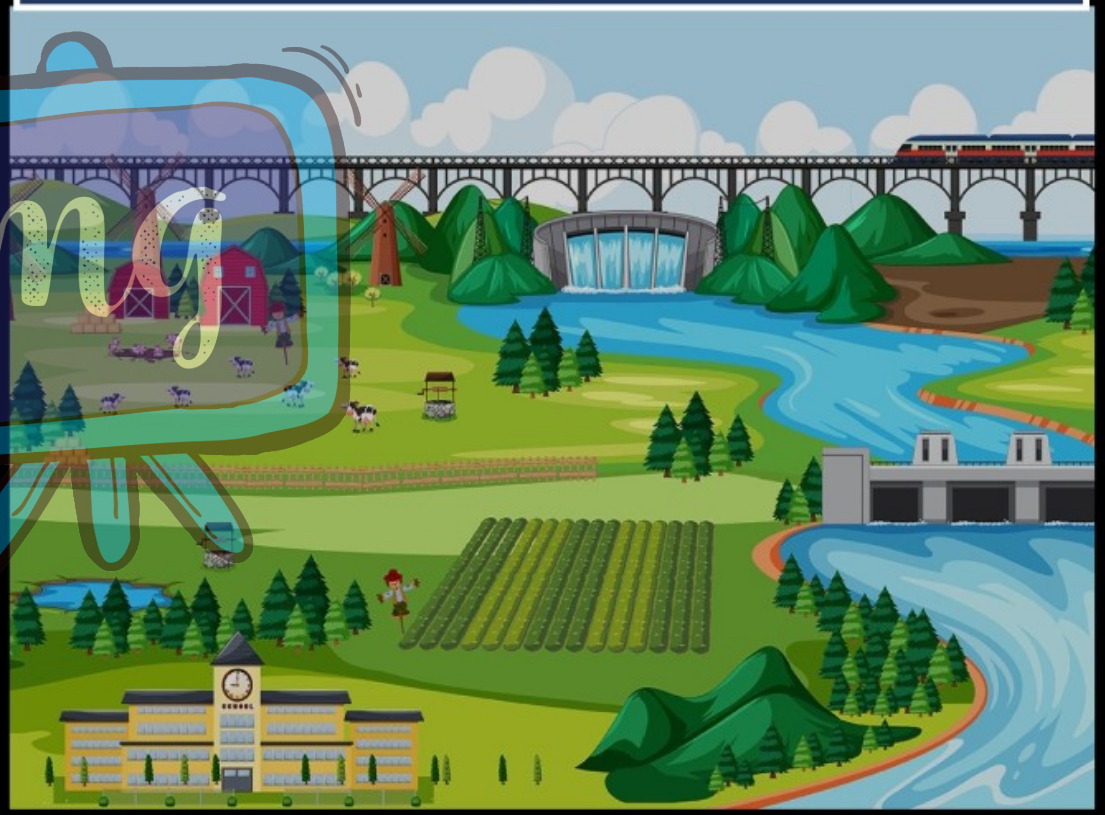
- विश्व का 3.17% उत्पादन
- पश्चिम घाट की उच्च भूमि पर : कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु में
- कर्नाटक : देश के कुल उत्पादन का 2/3 से अधिक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



भारत में कृषि विकास



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में कृषि विकास

- स्वतंत्रता से पहले भारतीय कृषि एक जीविकोपार्जी अर्थव्यवस्था
- बीसवीं शताब्दी के मध्य तक प्रदर्शन बड़ा दयनीय
- भयंकर अकाल व सूखे का साक्षी
- विभाजन से लगभग एक-तिहाई सिंचित भूमि पाकिस्तान में
- स्वतंत्र भारत में सिंचित क्षेत्र का अनुपात कम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार का तात्कालिक उद्देश्य खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाना था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने हेतु उपाय

- व्यापारिक फ़सलों की जगह **खाद्यान्न** उगाना
- **कृषि गहनता** को बढ़ाना
- कृषि योग्य बंजर व परती भूमि को **कृषि भूमि** में परिवर्तित करना



नोट

प्रारंभ में इस नीति से खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ा, लेकिन 1950 के दशक के अंत तक कृषि उत्पादन स्थिर हो गया।



खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने हेतु कार्यक्रम

- गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (IADP)
- गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (IAAP)



नोट

1960 के दशक के मध्य में लगातार दो अकालों से देश में अन्न संकट उत्पन्न हो गया। परिणामस्वरूप खाद्यान्नों का आयात करना पड़ा।



हरित क्रांति

- उच्च उत्पादकता की किस्मों (HYV) का प्रयोग



1960 के दशक के मध्य में

गेहूँ - मैक्सिको

चावल - फिलिपींस

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हरित क्रांति

- रासायनिक खाद का प्रयोग
- पैकेज प्रौद्योगिकी के रूप में प्रयोग :-

पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा गुजरात के सिंचाई सुविधा वाले क्षेत्रों में

हरित क्रांति से उद्योग के विकास को प्रोत्साहन



उर्वरक उद्योग



कीटनाशक उद्योग



कृषि यंत्र उद्योग



कृषि आधारित उद्योग

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हरित क्रांति के सकारात्मक प्रभाव

- खाद्यान्नों के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि
- सिंचाई से निश्चित जल आपूर्ति
- देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्म-निर्भर
- कृषि में प्रयुक्त कृषि निवेश को प्रोत्साहन
- कृषि आधारित तथा छोटे पैमाने के उद्योग के विकसित

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हरित क्रांति के नकारात्मक प्रभाव

- हरित क्रांति देश के सिंचित भागों तक ही सीमित
- कृषि विकास में प्रादेशिक असमानता में वृद्धि



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

1980 के दशक के आरंभ से यह प्रौद्योगिकी मध्य भारत तथा पूर्वी भारत के भागों में फैली।



भारत में कृषि विकास

1980 का दशक

1990 का दशक



1980 का दशक

- योजना आयोग ने वर्षा आधारित क्षेत्रों की कृषि समस्याओं पर ध्यान दिया।
- 1988 में कृषि जलवायु नियोजन प्रारंभ किया :-
  - प्रादेशिक संतुलन को प्रोत्साहित करने हेतु
- कृषि, पशुपालन तथा जलकृषि को विकास हेतु संसाधनों के विकास पर भी बल दिया।

1990 का दशक

उदारीकरण नीति

उन्मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था



सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (NMSA)

कृषि को अधिक विशिष्ट, स्थायी, पारिश्रमिक और जलवायु के अनुकूल बनाना

स्थान विशिष्ट एकीकृत/समग्र कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देना

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना : उपयुक्त मिट्टी और नमी संरक्षण उपायों के माध्यम से

जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु योजनाएँ

- परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)
- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY)



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा प्रौद्योगिकी विकास



कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा प्रौद्योगिकी विकास

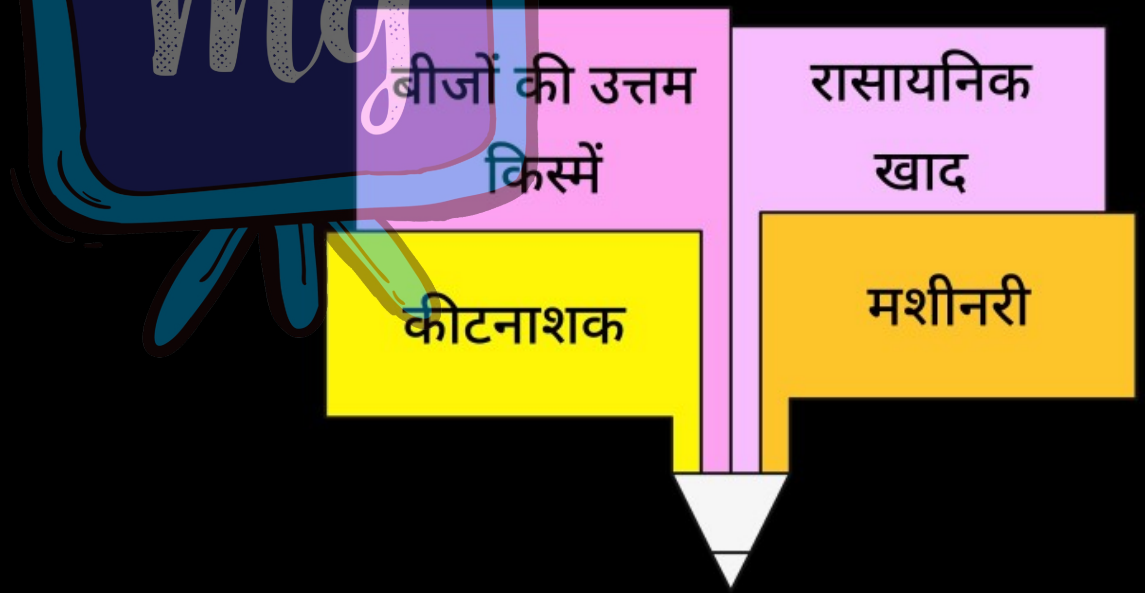
- पिछले पचास वर्षों में कृषि उत्पादन तथा प्रौद्योगिकी में वृद्धि
- फ़सलें जिनके उत्पादन में वृद्धि :-

चावल तथा गेहूँ

गन्ना, तिलहन तथा कपास

कृषि उत्पादन में वृद्धि के कारण

- सिंचाई का प्रसार
- आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का प्रयोग :-



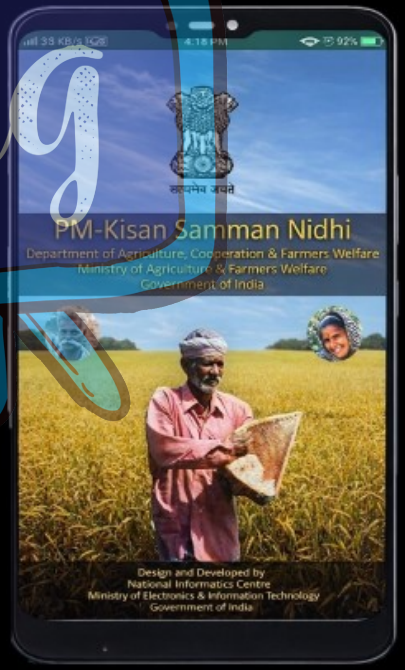
आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का प्रसार

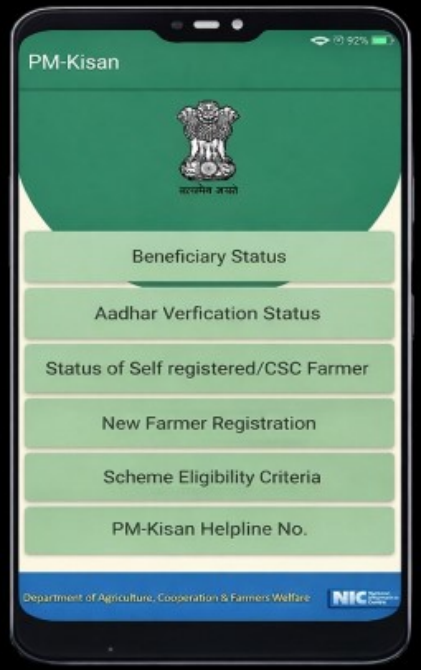
- पिछले 40 वर्षों में रासायनिक उवर्रकों की खपत में 15 गुना वृद्धि
- उन्नम बीज के किस्मों में कीट प्रतिरोधकता कम
- 1960 के दशक से कीटनाशकों की खपत में भी महत्वपूर्ण वृद्धि



भारत का किसान पोर्टल

किसान पोर्टल किसानों के लिए एक मंच





भारत का किसान पोर्टल

कृषि से संबंधित किसी भी जानकारी हेतु

- किसान का बीमा
- कृषि भंडारण
- फसल
- विस्तार गतिविधियाँ
- बीज
- कीटनाशक
- कृषि मशीनरी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

किसान पोर्टल से उपयोगकर्ता फार्म फ्रेंडली हैंडबुक, योजना दिशा-निर्देश आदि डाउनलोड कर सकते हैं।



भारतीय कृषि की समस्याएँ

- देश की अधिकतर कृषि समस्याएँ प्रादेशिक
- कुछ समस्याएँ सर्वव्यापी
- भौतिक बाधाओं से लेकर संस्थागत अवरोध



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारतीय कृषि की समस्याएँ

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता
2. निम्न उत्पादकता
3. वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता
4. भूमि सुधारों की कमी
5. छोटे खेत तथा विखंडित जोत
6. वाणिज्यीकरण का अभाव
7. व्यापक अल्प रोज़गारी
8. कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता

- कृषि क्षेत्र का केवल एक-तिहाई भाग ही सिंचित
- शेष कृषि क्षेत्र में फ़सलों का उत्पादन प्रत्यक्ष रूप से वर्षा पर निर्भर
- मानसून की अनिश्चितता व अनियमितता से सिंचाई हेतु नहरी जल आपूर्ति प्रभावित

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता

- अधिक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में भी काफ़ी उतार-चढ़ाव : क्षेत्र सूखा व बाढ़ दोनों सुभेद्य
- मरूस्थल में वर्षा बहुत कम तथा अत्यधिक अविश्वसनीय
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सूखा एक सामान्य परिघटना

शुष्क क्षेत्रों में आकस्मिक बाढ़

- वर्ष 2006 और 2017 में
- महाराष्ट्र, गुजरात तथा राजस्थान



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

सूखा तथा बाढ़ भारतीय कृषि के जुड़वाँ संकट बने हुए हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. निम्न उत्पादकता

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा भारत में उत्पादकता कम
- चावल, गेहूँ, कपास व तिलहन की प्रति हेक्टेयर पैदावार कम : अमेरिका, रूस तथा जापान मे अधिक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. निम्न उत्पादकता

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर की तुलना में भारत में श्रम उत्पादकता भी बहुत कम
  - कारण : भूसंसाधनों पर अधिक दबाव
- शुष्क क्षेत्रों में अधिकतर मोटे अनाज, दालें तथा तिलहन की खेती
  - उत्पादकता बहुत कम

3. वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता

- आधुनिक कृषि में लागत बहुत अधिक
- सीमांत व छोटे किसानों की कृषि बचत कम
- सीमांत व छोटे किसान कृषि में निवेश करने में असमर्थ

किसानों की ऋणग्रस्तता

- विविध संस्थाओं तथा महाजनों से ऋण
- फ़सलों के खराब होने से कर्ज़ के जाल में फँसना



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

4. भूमि सुधारों की कमी

- भूमि का असमान वितरण
- अंग्रेज़ी शासन के दौरान भूराजस्व प्रणालियाँ :-



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

ज़मींदारी प्रथा किसानों के लिए सबसे अधिक शोषणकारी रही है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्वतंत्रता के पश्चात् भूमि सुधार

- भूमि सुधारों को प्राथमिकता
- कमज़ोर राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण पूर्णतः फलीभूत नहीं
- राजनीतिक रूप से शक्तिशाली ज़मींदारों के खिलाफ़ कठोर राजनीतिक निर्णय लेने में टालमटोल
- कृषि योग्य भूमि का असमान वितरण जारी रहा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारतीय कृषि की समस्याएँ

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता
2. निम्न उत्पादकता
3. वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता
4. भूमि सुधारों की कमी
5. छोटे खेत तथा विखंडित जोत
6. वाणिज्यीकरण का अभाव
7. व्यापक अल्प रोज़गारी
8. कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. छोटे खेत तथा विखंडित जोत

- सीमांत तथा छोटे किसानों की संख्या अधिक
- 60% से अधिक किसानों के पास एक हेक्टेयर से छोटे भूजोत
- ~40% किसानों की जोतों का आकार 0.5 हेक्टेयर से भी कम
- भूजोतों का औसत आकार और भी कम : बढ़ती जनसंख्या

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राज्यों में भूजोतों से संबंधित समस्या

- अधिकतर भूजोत बिखरे हुए
- कुछ राज्यों में एक बार भी चकबंदी नहीं हुई
- कई राज्यों में पुनःचकबंदी की आवश्यकता



विखंडित व छोटे भूजोत आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी हैं।

6. वाणिज्यीकरण का अभाव

- जीविकोपार्जी कृषि की अधिकता
- किसानों के पास अधिक उत्पादन के लिए पर्याप्त भू-संसाधन नहीं
- उपांत व छोटे किसानों द्वारा खाद्यान्नों की कृषि

नोट

सिंचित क्षेत्रों में कृषि का आधुनिकीकरण तथा वाणिज्यीकरण हो रहा है।



7. व्यापक अल्प रोज़गारी

- असिंचित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अल्प रोज़गारी
- ऋत्विक बेरोज़गारी : 4 से 8 महीने तक
- फ़सल ऋतु में भी वर्ष-भर रोज़गार उपलब्ध नहीं
- कृषि कार्य लगातार गहन श्रम वाले नहीं

8. कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण

☛ **कारण :** सिंचाई और कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियाँ

☛ **प्रभाव :-**

- मृदा उर्वरता क्षीण
- जलाक्रांतता
- लवणता
- मृदा क्षारता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

कीटनाशक रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा परिच्छेदिका में जहरीले तत्वों का सांद्रण हो गया है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सिंचित क्षेत्रों में प्रभाव

- फ़सल प्रतिरूप के दलहन (लेग्यूम) विस्थापित
- बहु-फ़सलीकरण से परती भूमि की मात्रा में कमी
- उर्वरकता पाने की प्राकृतिक प्रक्रिया अवरुद्ध

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

उष्ण कटिबंधीय आर्द्र व अर्ध शुष्क क्षेत्र भी कई प्रकार के भू-निम्नीकरण से प्रभावित हुए हैं, जैसे जल द्वारा मृदा अपरदन तथा वायु अपरदन जो प्राय: मानवकृत हैं।

